दैनिक भास्कर
सिटी लाइफ 25-08-2022

मानसून में गुलाबी, लाल और नीले रंगों के कालीन का ट्रेंड

New Trend

मानसून में किस तरह घर पर कालीन की देखभाल हो सकती है। इन दिनों किन रंगों के कालीन ट्रेंड में हैं। आइए जानें...

सिटी रिपोर्टर | चंडीगढ़

रजवाड़ों की बात हो या पुराने घरों की, कालीन से चारदीवारी की रौनक दोगुनी हो जाती थी। आज भी यह घरों में सजावट का काम करते हैं। लेकिन अब इनका स्वरूप बदल गया है। इसी बदले स्वरूप और मानसून में इस्तेमाल होने वाले कारपेट पर हमने बात की जयपुर रग्स के डायरेक्टर योगेश चौधरी से। उन्होंने बताया- बारिश में घरों ब्राइट रंग आसमानी नीला, हरा, गुलाबी के कारपेट का इस्तेमाल होता है। पिछले दस सालों से लोग ट्रेडिशनल डिजाइन की बजाय मॉडर्न डिजाइन पसंद कर रहे हैं। क्योंकि लोगों का लाइफस्टाइल बदलने के साथ घरों के डिजाइन व इंटीरियर में भी काफी बदलाव आया है। घरों के मॉडर्न डिजाइन के जैसे रग्स भी एब्स्ट्रैक्ट फॉर्म में आ गए हैं। दूसरा लोग छोटे कारपेट ज्यादा खरीदते हैं। शुरुआत को लेकर बोले- कालीन की शुरुआत मेरे पिता ने 70 के दशक में राजस्थान से की थी। आज देश के अलग राज्य में इसके जरिए लगभग 40 हजार आर्टिजंस को काम दिया गया है। इनमें 85 प्रतिशत औरतें हैं, क्योंकि हाथ के काम में इनसे ज्यादा धनी कोई नहीं। भारत के साथ-साथ जर्मनी इटली अमरीका आदि देशों के डिजाइनर भी साथ जुड़े हैं। चोकला वूल बीकानेर की भेड़ों के बालों से तैयार करते हैं। मेरीनो वूल न्यूजीलैंड से खरीदते हैं। सिल्क के कार्पेट बनाने के लिए चीन से सिल्क खरीदते हैं।

योगेश चौधरी

रग्स के बारे में ...

मनचाहा कलेक्शन | कारपेट तैयार करने के बाद जो भी वेस्ट बचता है, उसे आर्टिजंस को दे दिया जाता है। उसके इस्तेमाल से पसंदीदा कलेक्शन तैयार करते हैं। तभी इस प्रोजेक्ट का नाम मनचाहा कलेक्शन रखा गया है। अंगूर, शक्करपारों आदि से प्रेरित होकर डिजाइन बनाया गया है। बीचों-बीच गुलाब का डिजाइन है।

• इसमें आसमान और धरा को सेल्फ प्रिंट में दिखाया है। यह एब्स्ट्रैक्ट डिजाइन है।

• यह बारिश होने के बाद को मंजर को दर्शाता है। जिस तरह से हर ओर दिखाई देने वाले रंग थोड़े और हसीन हो जाते हैं मगर पानी की मौजूदगी फिर भी रहती है।

रग्स का यूं रखें ध्यान

- कारपेट पर कोई गीले जूते लेकर न चढ़ें।
- हफ्ते में दो बार वैक्यूम से या सीख वाले झाड़ू से भी साफ कर सकते हैं।
- हफ्ते में एक बार धूप जरूर लगवाएं।
- कोई दाग धब्बा पड़ जाए तो बेबी वाइप्स से साफ करें।
- अच्छे फैब्रिक वाले कालीन खरीदें, ताकि ह्यूमिडिटी से उसमें बदबू न आए।
- दिन में एक बार ए सी जरूर चलाएं।

यूं होता है कालीन तैयार | वूल, कॉटन, सिल्क, बैंबू आदि से कालीन का बेस तैयार किया जाता है। एक-एक जोड़ को गिना जाता है, ताकि कुछ ऊपर नीचे न हो जाए। अगर कोई जोड़ कम या ज्यादा है तो उसे रफू करते हैं। फिर आकार एक बराबर किया जाता है। सारे जोड़ को एक-दूसरे से मिलाने या फालतू धागों को हटाने के लिए हल्की आंच लगाई जाती है। कालीन को सैनिटाइजर वाले पानी में भिगोया जाता है, ताकि कीटाणु और धूल न रहे। आकार बराबर करने के बाद बॉर्डर की कटिंग होती है और अंत में ऊपर डिजाइन बनता है।

फायदे | • आजकल दिन में तो लोग घर से बाहर ही रहते हैं। ऐसे में जब घर रात को खोलते हैं तो आवाज गूंजती है। कालीन ध्वनि को सोखता है।

• कालीन पर परिवार के लोग एक साथ बैठकर खाने के साथ खेल भी सकते हैं।